Part-II

भारत में वन वर्षा का अनुसरण

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में - उष्णकटिबंधीय वर्षा वन
विषुवतीय वन
अधिक वर्षा वाले वन

कम वर्षा वाले क्षेत्र में कटीले एवं झाड़ियाँ

→ वनस्पति का पर्यावरण की दशाओं एवं जल की उपलब्धता के अनुसार अपने आप को ढाल लिया है

पर्वतीय वन वर्षा का अनुसरण नहीं करते अपितु ताप का अनुसरण करते हैं

अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में तक मानसूनी वर्षा होती है अर्थात् भारत के अधिकतर भागों तक वर्षा मानसूनी होती है इन क्षेत्रों के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु के ठीक पहले अपने पत्ते गिरा देता है। आर्द्रता घट जाती है।

राजस्थान 40 सेमी से कम वार्षिक वर्षा

अरब सागर सदाबहार वर्षा वन

चौड़ी पत्तियाँ के कारण वाष्पोत्सर्जन अधिक है पर्यावरण में नमी की मात्रा बनायी रखती है।

अब खेती के लिए जंगलों की कटाई

कर्नाटक आंध्रप्रदेश पर 75% सदाबहार वन

कोणधारी वन / टुंड्रा या अल्पाइन

हिमालय प्रदेश - देवदार, शीतोष्ण कोणधारी

सदाबहार वन

ऊँचाई के ऊपर जाने पर तापमान में गिरावट होती जिससे सीमित क्षेत्र में ही जलवायु में परिवर्तन आते हैं

टुंड्रा या अल्पाइन
काई, घास और लिचेन

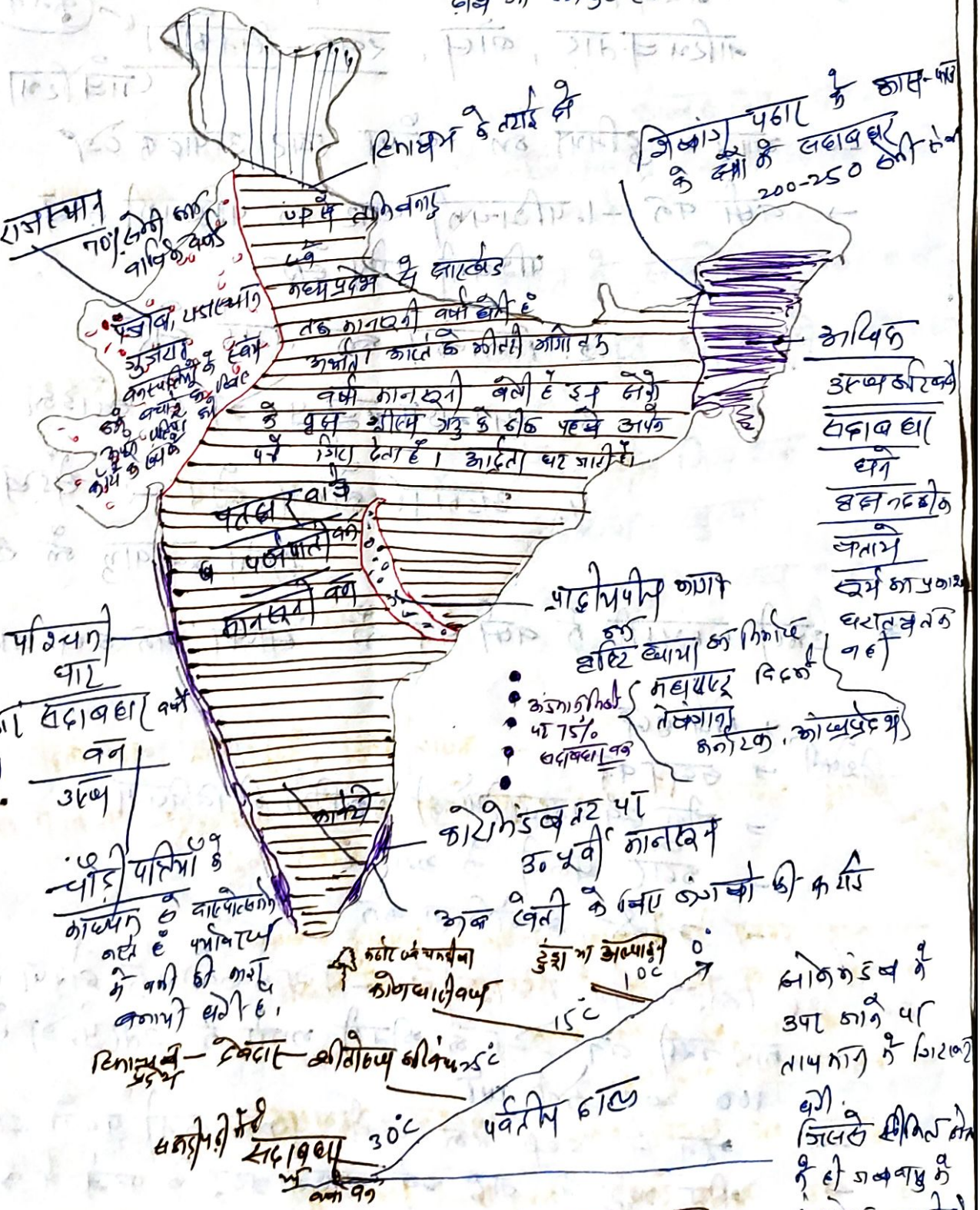

अफ्रीका कांगो बेसिन - विषुवत रेखा पर स्थित केन्या

1. उष्ण वर्षा
→ जिन क्षेत्रों में तापमान अधिक पाया जाता है एवं वार्षिक वर्षा 200 cm से अधिक होती है उष्णकटिबंधीय वर्षा वन
→ वृक्ष अपनी पत्तियों को नहीं गिराते
→ वृक्ष बड़े लंबे-2
→ आबनूस, एबोनी, महोगनी, रोजवुड, नारियल ताड़, बांस, रबड़, सिनकोना (कुनैन) - वृक्ष की छाल (मलेरिया की दवा)

→ भारत - दुनिया का चौथा रबर उत्पादक देश
→ वर्षा वन - 1. पश्चिमी घाट का पश्चिमी ढाल पश्चिमी तटीय क्षेत्र
2. हिमालय का तराई क्षेत्र
3. अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर पूर्वोत्तर क्षेत्र
4. अंडमान निकोबार द्वीप - सैंडल द्वीपीय जलवायु को समुद्री जलवायु

* अगर्नी सह्याद्रि के वर्षा वन को 'शोला' वन कहा जाता है।

→ लंबे वृक्ष
विशेषता → सघन वन
→ जीव एवं वनस्पतियों की प्रजातियों की विविधता
→ कठोर लकड़ी के भंडार है
→ आर्थिक उपयोगिता कम

2. उष्णकटिबंधीय मानसूनी वन - देश के सर्वाधिक क्षेत्र।
→ मानसूनी वन देश के भीतरी भागों के उत्तर प्रदेश में बिखरी हुई
100-200 सेमी वर्षा
→ जून से sep तक वर्षा मानसूनी पवनों द्वारा
→ शीत ऋतु के बाद एवं ग्रीष्म ऋतु के पहले ये अपना पत्ती गिराते
→ शीशम, साल, सागौन, खैर साखू, आम, कोकबा
चंदन - कर्नाटक, नीलगिरी